कल और आज

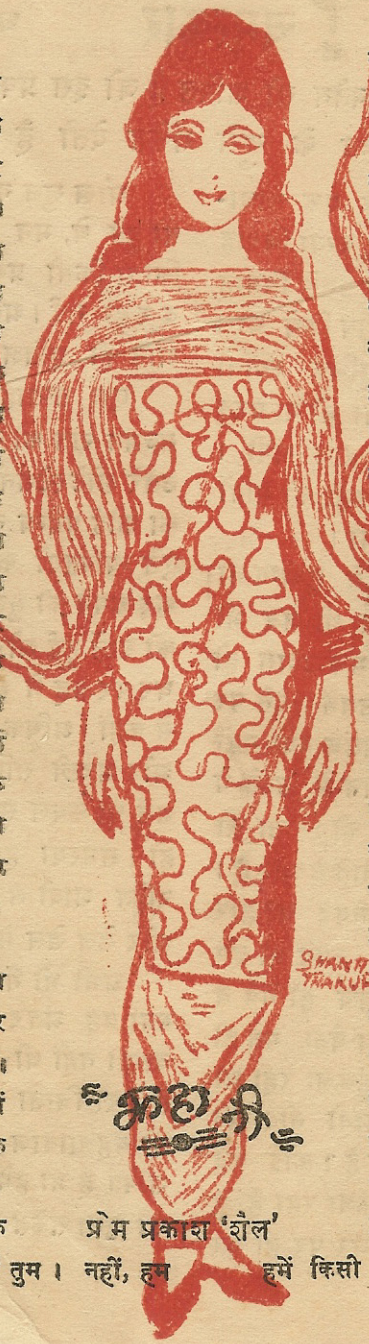

आज जब मैं अपने लान में बैठा तो सामने की सफेद दिवार पर कुछ चित्र घूमने लगे। उनकी वेश-भूषा अलग अलग थी, परन्तु उनका चेहरा एक था। समय के कारण चेहरे पर कुछ उतार चढ़ाव थे। लाल लाल गाल, बड़ी-बड़ी कजरारी आंखें, एड़ी को छूते काले रेशमी बाल। सब कुछ तो तुमसे मिलता जुलता है। पर ग्यारह वर्ष के समय के कारण जो अन्तर आया है, उसे सोच कर मैं विचार करता हूं कि क्या तुम वही सुमन हो या फिर उसकी केवल छाया ?

कल के वह दिन बार-बार इस दिवार पर चित्रित हो उठते हैं। वह चार हाथ कार्य में व्यस्त, बन रहा है एक घरौंदा, केवल एक इसमें दो कमरे हैं, एक में मैं रहूंगा और एक में तुम। दोनों इकट्ठे रहेंगे। बाहर आंगन में खड़ी है कार, जिसमें हम तुम बैठ कर घूमेंगे। एक कुत्ता भी होगा कार में, हम शारदा और इन्दु को नहीं बिठाएंगे। वह बहुत शैतान हैं। वह हमारा घर तोड़ देते हैं हमें अपने खिलौने छूने तक नहीं देते। सुधा और कृष्णा बहुत अच्छी हैं वह हमें अपने बगीचे से फूल लाकर देती हैं। कितना सज जाता है हमारा घर.....आ प्रेम अब चलें, अब रात बहुत हो गई है।' और तुम मेरा हाथ पकड़ कर मुझे एक जानी पहचानी राह पर ले चलती। हम कई जुगनुओं का पीछा करते आगे बढ़ते। कई बार हमारी मुट्ठियां उनके प्रकाश से जगमगा उठती। हमें ऐसा लगता मानों हमने मरकत मणी को हाथ में ले रखा हो।

नहीं, हम हमें किसी ने अकेले न देखा था

प्रेम प्रकाश 'शैल'

तारा छाया भी हमसे कितना खुश था। चांदनी हम दोनों पर इकट्ठी बरसती। पर कुछ क्षणों के लिये। इसके बाद हम अलग हो जाते। पर न जाने क्यों हमें यह महसूस न होता कि हम अलग हैं। निद्रा देवी के प्रगाढ़ प्रभाव से हम अपनी, अपनी माँ की गोद में गहरे श्वांस लेते। कुछ समय पश्चात् स्वप्नों की परी आती और हम फिर मिल जाते। वही खेलते जो सुबह खेला करते। जिन बातों को हम केवल दिन में सोचते थे, उन्हें स्वप्न में पूरा कर लेते।

हमें एक दूसरे का अभाव बहुत खटकता था। याद है मुझे, हम (मैं, मेरे पिता जी और माता जी) किसी कार्यवश दो दिन के लिए बाहर गये थे। किन्तु एक दिन में वापस लौट आए। कारण ? कारण थी मेरी तुम्हारी बिमारी। जो वियोग के साथ आयी और मिलन आने पर चली गई। वियोग का एक-एक क्षण, एक युग के समान व्यतीत होता।

परन्तु एक दिन वियोग की बदली की ओट में हमारा मिलन-चांद छुप गया। हमारी बदली दिल्ली हो गई। हमारे नन्हे नेत्र खूब रोये। हमारे साये रोये। घरौंदे रोये। साथी रोये। हमारे स्वप्न रोये और रोयी प्रकृति। पर इससे क्या हो सकता था ? वियोग रुपी हाथी ने इन सब नन्हे पौधों को कुचल दिया। भाग्य के सितारे पलट गये। हम दिल्ली पहुँचे। कुछ दिन तक हमारी तुम्हारी बिमारी के पत्र आते रहे परन्तु समय के सूर्य ने सब कोहरा पी लिया। कोहरे की भाँति सब कुछ समाप्त हो गया। ऐसा लगा कि जैसे कुछ हुआ ही न था। हम तुम शायद एक दूसरे को भूल गये।

× × ×

पर आज.....!

हम एक दूसरे से मिले पर आंखों, आँखों में। अब हम बड़े हो गये हैं। तुम मेरी तरफ एकटक नहीं देख सकती, और न मैं तुम्हारी ओर। "हम अब मित्र नहीं केवल सहपाठी हैं।" यह मेरा मन कहता है। पर न जाने तुम्हारा मन क्या कहता है ? तुम मुझे क्या समझती हो, एक सहपाठी या और कुछ ?

अब वह घरोंदे नहीं बन सकते हैं। अब तो पेन ही कागज पर चल सकता है। अब चार हाथों की आवश्यकता नहीं। बड़े होने के साथ हमने भी प्रगति कर ली है। अब चाँदनी हम दोनों पर इकट्ठी नहीं बरसती है। हम एक दूसरे का हाथ नहीं पकड़ सकते हैं। यह शिष्टाचार के विरुद्ध है। हम मितभाषी हैं। बहुत कम बोलते हैं एक दूसरे से। तुम कभी बोलती भी हो तो अजीब भाषा में।

"शैल अपनी नोट्स की कापी देना।"

शायद तुम्हारी आंखे नीची होती हैं। मेरी आंखें भी तुम्हारे साये को देखती हैं। कभी मैं सोचता हूं कि तुम्हारे चेहरे की

श्रोर देखूं। परन्तु शायद उसी समय तुम भी यही सोचती हो क्योंकि जब मैं तुम्हें देखता हूं तो तुम्हारी आंखो से मेरी आंखे मिल जाती हैं। कैसा अजीब सा लगता है उस समय, एक करेंट सा हमारे शरीर में......नहीं मेरे शरीर में दौड़ जाता है।

सुबह तुम आती हो, मैं आता हूं, और - और आते हैं। पर शायद ही हम सब कभी इकट्ठे आये हों। शाम होती है तुम मैं और सब इकट्ठे निकलते हैं। अलग-अलग दिशाओं को चले जाते हैं। तुम उत्तर को जाती हो और मैं दक्षिण को। हम मुड़ मुड़ कर एक दूसरे को देखते हैं। न जाने वह कौन सा आकर्षण है जो हमारी गर्दनों को फेर देता है। शायद हम कुछ कहना चाहते हैं पर न जाने क्यों मेरे होठ खुल नहीं पाते हैं।

तुम्हें सामने देखकर ऐसा लगता है ऐसा लगता है मानो तुम देवी हो। देवी के सामने आने पर जिस प्रकार भगत के होठ, आँखे व सब अंग कार्य करना बन्द कर देते हैं उसी प्रकार मेरे अंग भी– मेरे भी होंठ सिल जाते हैं। चाहते हुए भी मैं कुछ कह नहीं पाता हूं।

इसी तरह की उधेड़ बुनों में मेरा मन डूबा रहता है। कुछ चाहता है, कुछ करता है। पुस्तक सामने लेकर बैठता हूं तो उसमें पृष्ठों में छपे हुए शब्द मिट जाते हैं। तुम्हारी याद की तरंगें– वहां तुम्हारा चित्र बना देती हैं। एक ओर जिसके होता है रेखाओं से निर्मित कल। दूसरी ओर है शून्य केवल कागज–आज। बस कल और आज में केवल समय का ही तो अन्तर है जो एक दूसरे को दूर कर देता है।